स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स
RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

जीव वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में अक्सर जंतुओं पर प्रयोग किए जाते हैं पर कुछ ऐसे वैज्ञानिक भी हुए हैं जिन्होंने खुद पर ही प्रयोग किए हैं। देखते हैं कुछ उदाहरण।

वमन स्नान

चिकित्सा के क्षेत्र में खुद पर प्रयोग करने का इतिहास लिखा जाए तो अमरीकी मेडिकल छात्र स्टबिन्स फिर्थ (1784-1820) का नाम सबसे ऊपर होगा। फिर्थ ने खुद पर नाटकीय प्रयोगों की एक श्रृंखला चलाई, यह साबित करने के लिए कि येलो फीवर (पीत ज्वर) कोई छूत का रोग नहीं है। फिर्थ ने खुद पर प्रयोगों की शुरुआत येलो फीवर से पीड़ित मरीज़ की ताज़ी काली उल्टी को अपने बाहों के ज़ख्मों पर लगाकर की। फिर्थ को येलो फीवर नहीं हुआ। इस सफलता से उत्साहित होकर फिर्थ ने मरीज़ की उल्टी को अपनी आंखों पर आज़माना शुरू कर दिया। इसके साथ ही फिर्थ ने पीड़ित के कुछ शारीरिक द्रवों (जैसे रक्त, थूक, पसीना और मूत्र) को भी अपने शरीर पर मलना शुरू कर दिया। इसके बाद फिर्थ ने वमन स्नान यानी उल्टी की भाप से स्नान की सोची। इसके लिए वह उल्टी की गर्म भाप से भरे कमरे में दो घंटे बैठा रहा। इससे उसके सिर में तेज़ दर्द हुआ मगर वह स्वस्थ रहा।

अंततः फिर्थ ने उल्टी को भोजन के रूप में लेना शुरू कर दिया। पहले गोली के रूप में और फिर सीधे पीड़ित के मुख से। इसके बावजूद वह येलो फीवर से पीड़ित नहीं हुआ। फिर्थ ने पूरे विश्वास से घोषणा कर दी कि येलो फीवर छूत का रोग तो नहीं है। उसकी बात स्वीकार भी कर ली गई।

और वह गलत भी नहीं था। येलो फीवर छूत का रोग नहीं है बल्कि एक संक्रामक रोग है। मतलब यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को सीधे नहीं लगता। बीच में एक वाहक जीव की ज़रूरत होती है। बताते हैं कि यह बात भी खुद पर ही प्रयोग करने वाले एक अन्य शोधकर्ता द्वारा साबित की गई। यह बात सामने लाने का श्रेय अमरीकी सेना के सर्जन जेसे लाज़ियर (1866-1900) को जाता है। लाज़ियर येलो फीवर आयोग के सदस्य होने के नाते इस पर प्रयोग कर रहे थे। उन्हें पूरा यकीन हो गया था कि येलो फीवर एक मच्छर के माध्यम से फैलता है। कहते हैं कि इन्होंने येलो फीवर फैलाने वाले संक्रमित मच्छरों से खुद को कटवा लिया था। इस दंश से वे येलो फीवर की चपेट में आए, जो जानलेवा साबित हुआ।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी